(कविता)
औरत का दिल

ओ दिल जो भटकते को राह दिखाए
ओ दिल जो हारे हुए को हिम्मत दे
ओ दिल जो किसी की आँखों में आँसू न देखे
ओ दिल जो खुद बंद कमरों में आँसू बहा ले
इतनी दयालु और ममतामयी होती है औरत का दिल।

ओ दिल जिसने छोड़ दी अपनी जन्मभूमि
ओ दिल जिसने भुला दिए पुराने रिश्ते
ओ दिल जिसने अपना ली ससुराल की भूमि
ओ दिल जिसने सहमकर मान ली दुनिया की रीत
वही दिल जो कृष्ण को छोड़ मान ले
अपने पति को ही देवता
इतनी प्रेममयी और करुणामयी होती है औरत का दिल।

ओ दिल जो कभी दुर्गा-सा रूप धर ले
ओ दिल जो कभी लक्ष्मीबाई बन अंग्रेजों से लड़ ले
ओ दिल जो कभी रांझा की हीर बन जाए
ओ दिल जो कभी राम की सिया बन जाए
और वही दिल जो कभी मीरा-सी जोगन बन जाए
इतनी सहनशील और साहसी होती है औरत का दिल।

सृष्टि केशव
भूगोल विभाग
2022-25
11793